प्रार्थना के असर का एक और अध्ययन

यह बात काफी समय से चर्चा में रही है कि क्या स्वास्थ्य लाभ कर रहे मरीज़ों को प्रार्थना या दुआओं से कोई लाभ मिलता है। इस संदर्भ में मतभेद काफी गहरे हैं और इन्हें सुलझाने के लिए कुछ प्रयोग भी किए गए हैं। ऐसा ही एक प्रयोग हाल ही में मेसाचुसेट्स के बेथ इस्राइल डेकोनेस मेडिकल सेन्टर के माइण्ड/बॉडी मेडिकल इंस्टीट्यूट के हर्बर्ट बेन्सन, जेफ्री डुसेक व उनके सहकर्मियों ने किया और आश्चर्यजनक परिणाम हासिल किए।

इन शोधकर्ताओं ने कोरोनरी हार्ट बायपास ऑपरेशन के बाद 1802 मरीज़ों का लेखा जोखा रखा। इन मरीज़ों में से एक समूह ऐसा था जिसके लिए कई ईसाई प्रार्थना समितियों ने दुआएं कीं। दूसरे समूह के मरीज़ों की सेहत के लिए कोई प्रार्थना नहीं की गई थी। सारे मरीज़ों को यह तो बता दिया गया था कि वे इस तरह के प्रयोग में शामिल हैं मगर यह नहीं बताया गया था कि वे किस समूह में हैं। उनकी देखभाल कर रहे डॉक्टरों को भी नहीं मालूम था कि किन मरीज़ों की सेहत के लिए प्रार्थना की जा रही है और किन के लिए नहीं की जा रही है।

प्रयोग से पता चला कि प्रार्थना का कोई प्रेक्षणीय असर नहीं पड़ता है। प्रार्थना शुदा मरीज़ों में से 52 प्रतिशत और प्रार्थना रहित मरीज़ों में से 51 प्रतिशत को ऑपरेशन उपरांत पेचीदगियां व दिक्कतें पैदा हुईं।

अमेरिकन हार्ट जर्नल नामक शोध पत्रिका में प्रकाशित इस अध्ययन में एक और आयाम था जिसके परिणाम आश्चर्यजनक रहे। मरीज़ों का एक तीसरा समूह भी था। इस तीसरे समूह के लिए भी वही प्रार्थनाएं की गई थीं जो पहले समूह के लिए थीं। मगर इन्हें बता दिया गया था कि उनकी सेहत के लिए दुआएं की जा रही हैं। पता चला कि तीसरे समूह के 59 प्रतिशत मरीज़ों को ऑपरेशन उपरांत दिक्कतों का सामना करना पड़ा। यानी जिन्हें पता था कि उनके लिए प्रार्थना की जा रही है, उन्हें ज़्यादा परेशानी हुई। शोधकर्ता इस परिणाम को समझ पाने में असमर्थ हैं। मगर ड्यूक विश्वविद्यालय चिकित्सा शाला के मिशेल क्रुकॉफ का मत है कि शायद मरीज़ों पर इस बात का दबाव हो गया था कि उनकी सेहत के लिए लोग प्रार्थना कर रहे हैं और इसी दबाव ने उनकी परेशानियां बढ़ा दीं। ***(स्रोत फीचर्स)***